जिंदगी किस

रत्ना भदौरिया

किस के बारे में कहूं हर किसी ने तो मुझे मारा है।मरने से तो कभी डर ही नहीं लगा। लेकिन ज़िंदगी ने ही मुझे मार दिया । फोन की तरफ देखते हुए मैं रमेश के साथ बिताए दिन याद करने लगी। रमेश के बार- बार मना करने पर भी हम उसी जगह जाते जहां वो मुझे पहली बार मिला। वो कहता भी कि तुम रोज एक ही जगह आकर बोर नहीं होती। सभी लड़कियों की तरह रोज- रोज नयी जगह घूमने चला करो। नयी - नयी चीजों के बारे में देखने जानने को मिलेगा। नहीं- नहीं मुझे यहां बहुत सुकून मिलता है, यहीं से मेरी जिंदगी की शुरुआत हुई, यहीं से मैंने सपने देखने शुरू किये। जोर -जोर से नहीं- नहीं की आवाज सुनकर घर में काम कर रही गुलाबो दौड़कर आयी क्या हुआ दीदी? कुछ नहीं कुछ नहीं। बताओ न दीदी। सिर फट रहा है एक कप चाय पिला दो,अदरक थोड़ी ज्यादा डाल देना और चीनी मत डालना। "मरने से कभी डर नहीं लगता, मुझे जिंदगी ने मारा।"यही शब्द बार- बार दिमाग़ में कौंध रहे थे। तभी गुलाबो चाय लेकर आयी ,चाय का कप पकड़ते हुए जैसे ही चाय का पहला घूंट ऐसा लगा जैसे रमेश चाय बनाकर अपने हाथों से पिला रहा है। अरे!दीदी आपके तो हाथ कांप रहे हैं गुलाबो ने टोंका। नहीं -नहीं तू जा यहां से अभी। कहीं नहीं जा रही बाकी का काम बाद में करूंगी। आज आप परेशान दिख रही हैं क्या बात है दीदी? रमेश भइया ने बात नहीं की या फिर मिलने से मना कर दिया कहते हुए गुलाबो वहीं बैठ गयी। क्या हुआ दीदी बताइये न?अरे!आपकी आंखों में तो आंसू गुलाबो ने आंखों की तरफ देखते हुए कहा । बताइये पहले आप सब कुछ बताती थी। गुलाबो सच कह

रही जब रमेश से पहली बार मिली थी, तब घर आकर गुलाबो को बताया । जब कभी रमेश से मिलने जाना होता गुलाबो को बताकर निकल जाती या फिर कहती सामान की जो थोड़ी- थोडी सामान की पोटली हैं उसे घर ले जाना और कल मम्मी -पापा के सामने बोलना कि घर का सामान खत्म है। उसी बहाने से रमेश से मिलना हो जायेगा ,गुलाबो भी वैसे ही करती। मम्मी- पापा के पैरों में दर्द की वजह से बाजार जाते ही नहीं। निकलते समय गुलाबो मुस्कुराते हुए कहती - रमेश भइया को मेरा नमस्ते बोलना और हां दीदी अकेले -अकेले सारे गोल गप्पे मत खा लेना इस गुलाबो के लिए भी ले आना ठीक है। रमेश और मैं बातों में लग जाते शाम कब हो जाती पता ही नहीं चलता? जल्दी-जल्दी आधा सामान रमेश खरीदता बाकी का मैं, कुछ चीजें रह जाती। मैं रमेश की तरफ मुस्कुराते हुए बोलती चिंता मत करो गुलाबो सब संभाल लेगी और सच में जब मम्मी डांट लगाती कि इतना समय लगता है बाजार में जब तेरे पापा और मैं जाया करते चट वापस आ जाते। मन में आता कि कह दूं मम्मी आपके दामाद और मुझे तो सुबह से शाम हो गई फिर भी पूरी चीजें नहीं आयीं आपके जैसे तो ---- ----? गुलाबो चट बोल पड़ती अरे!बीजी आप क्या जानें?बाहर कितनी भीड़ -भाड़ होती है,आप तो कितने सालों से बाहर ही नहीं गयीं। हां- हां तुम दोनों ने ही तो पाला है,चुपकर चम्ची कहीं की । गुलाबो भी मम्मी के ज्यादा मुंह न लगकर रसोई

ISSN:2583-8849

में चली जाती मैं भी पीछे-पीछे लाओ- लाओ गोल -गप्पे दो और गपा -गप खाने लगती , मैं रसोई के दरवाजे पर खड़ी देखती कहीं मम्मी न आ जायें। दोनों एक दूसरे की तरफ देखते फिर सामान की तरफ इशारा करती कि बच्चू अभी सामान भी कम है सब संभाल लूंगी वो भी इशारा करती। मम्मी को जाकर बोलती आज जल्दी घर जाना है मेहमान आये हैं,सामान कल जमाऊंगी क्योंकि मम्मी अपने सामने अपने सलीके से सामान रखवाती। गुलाबो ने थोड़ी दूर पर कमरा लिया हुआ था उसी में अकेली रहती,शादी अभी हुई नहीं मां -बाप गांव में रहते। कोरोना अपने चरम पर। रमेश और मैं मिलने के लिए बेचैन अब क्या हो ? होटल भी बंद घर भी नहीं बुला सकते , सहेलियों के यहां जाना उचित नहीं सभी सहेलियों में गुलाबो सबसे अच्छी सहेली जिसे हर बात बता सकती। रमेश फोन पर बार -बार मिलने की जिद्द करने लगा तभी गुलाबो ने सुन लिया। फोन रखते ही मेरे पास आ बैठी दीदी एक बात बोलूं। मैं- हां बोलो! आप दोनों को कोरोना की वजह से मिले हुए कितने दिन हो गये एक काम करिये आज कोई बहाना लगाकर आप कमरे पर चली जाइये शाम को वापस आ जाना। गुलाबो लेकिन ये कोरोना निकलने देगा कहीं। बहाना किस बात का लगायेंगे? गुलाबो इतने में फट से सोच जाती मानो हर समय मेरे बारे में ही सोच रही हो।दीदी आप ऐसा करना कि फोन मम्मी- पापा के पास रख देना इधर से फोन करूंगी आप उनसे पहले फोन उठा लेना और स्पीकर पर रखना। हैलो - हैलो आवाज नहीं आ रही क्या?यार मैं लता बोल रही हूं। पैसे दे दो यार तबियत बहुत खराब है अस्पताल में हूं वरना ये तेरी सहेली लता मर जायेगी। आप चट फोन रख मम्मी -पापा से जाने की बात कहना वो मना नहीं करेंगे क्योंकि जरुरत के पैसों के लिए कभी भी नहीं मना किया। याद है जब एक बार जोगेश्वर कैसे हाथ जोड़ते हुए आया और कहने लगा कि उसकी बेटी बीमार है। पैसे देने के बाद वापस न लौटाने की बात भी कही ,पता तो था ही कहां से देगा? कोई दारु पीने के पैसे तो ले नहीं रहा, आखिर बेटी के इलाज के लिए -------। गुलाबो की तरफ देख मैंने आश्चर्य से पूछा-ये बताओ इतने पैसों का करेंगे क्या? कुछ नहीं बैंक में रख देना कभी काम आयेंगे।वो बोलती ऐसा कि शक करने की कोई गुंजाइश ही नहीं छोड़ती। मैं भी उसके कहने के हिसाब से ही करती आखिर वो मेरी सबसे अच्छी सहेली जो। कोरोना चरम पर होने के बावजूद मैं और रमेश गुलाबो के कमरे में मिलने जाया करते,बस गुलाबो घर पर नये- नये बहाने बताती जो हमेशा सफल होते। कोरोना के समय निकलना गलत था लेकिन बिना मिले रहना मुश्किल हो गया। गुलाबो के इतनी बार कहने पर भी मैं सोचने लगी कि बताऊं तो क्या बताऊं?अब बताकर होना ही क्या है? मरने से डर नहीं जिंदगी ने ही मुझे मार दिया। बताओ न दीदी क्यों परेशान हो? कुछ नहीं। बताइये न दीदी वो और पास आती गयी, जितना गुलाबो मेरे पास आती उतना ही दिल बेचैन था कि सबकुछ बता दूं फिर सोचा कि क्या गुलाबो को पता नहीं होगा? आखिर वो भी तो सारे दिन यहीं रहती है ,जरुर उसने पूरी कोशिश की होगी लेकिन इस बार सफल नहीं हो पायी, किसी से कुछ बता भी नहीं सकती। दूसरी तरफ अगर गुलाबो को सबकुछ बता नहीं दिया तो सिर फट जायेगा । क्या बताऊं गुलाबो?मम्मी -पापा ने कहीं और -----इसके आगे गले से आवाज ही नहीं निकली गला रूंध गया और आंसुओं की झड़ी लग गई। मत रो दीदी मत रो सब ठीक हो जाएगा का आश्वासन देते हुए गुलाबो भी पकड़कर रोने लगी क्या बताऊं दीदी? पता नहीं भगवान भी ऐसा क्यों

ISSN:2583-8849

करते हैं? गुलाबो भगवान कुछ नहीं करते ये हम और हमारा समाज कर रहा है। दीदी ये सब हुआ कब ? तुझे नहीं पता गुलाबो । नहीं उस दिन कमरे में बातें होते सुना लेकिन समझ नहीं पायी ।कल मम्मी- पापा ने दूसरे लड़के से शादी तय कर दी है। पापा के दोस्त का लड़का आदित्य जो लखनऊ में इंजीनियर के पद पर काम करता है। अच्छा दीदी देखने आये नहीं वो लोग। अगर आते तो शरबत में मिर्च मिलाकर पिला देती,भाग खड़े होते यहां से सबके सब । महज मुझे हंसाने के लिए फीकी सी हंसी हंस दी। उनका कोई दोष नहीं गुलाबो। उन लोगों ने कहा देखना क्या है? दोस्त की ही बेटी है और अगले महीने ही शादी की तारीख रखी है जितनी तेजी से मुंह से शब्द निकल रहे उससे दोगुनी तेजी के साथ आंसू जिनको मैं नहीं रोक पायी। दीदी आज ही बात करते हैं, बताते हैं बीजी को कि आप किसी और से प्यार करती हैं लेकिन एक बार रमेश भइया से फोन करके पूंछ लीजिए कि अगर मम्मी -पापा नहीं तैयार हुए तो वे -----करेगें या नहीं। मैंने फोन लगाया और रमेश से करीब पन्द्रह मिनट तक बात हुई,गुलाबो ने भी बात किया रमेश भइया शादी आपके साथ होकर रहेगी वरना इस घर में काम --------। रमेश ने कई बार हां किया भी । मेरी हिम्मत नहीं हो रही गुलाबो कि मम्मी -पापा को कुछ बताऊं क्योंकि पता तो है कि रमेश ---------। ये जाति वाति कुछ नहीं गुलाबो ने एक नहीं सुनी, मम्मी -पापा के सामने जाते ही शुरू हो गई। आप लोग ये कैसा अन्याय कर रहे हैं? दीदी रमेश नाम के लड़के से प्यार करती हैं उनकी जिंदगी का सवाल है ऐसा नहीं कर सकते। मम्मी- पापा पहले गुलाबो के ऊपर बरस पड़े फिर मेरे ऊपर आफतों का पहाड़ टूटा। रमेश नाम से ही पता चल रहा है कि नीची जाति का होगा!कौन सी जाति का? पापा बताइये कि बुआ जी के लड़के का नाम महेश है फिर वो भी ----------। जाति कोई ऊंची -नीची नहीं होती पापा व्यवहार और काम होते हैं! मैं अपने आपको बोलने से नहीं रोक पाई क्योंकि रमेश के बारे में एक लब्ज भी गलत बर्दाश्त नहीं कर सकती। गुलाबो भी चुप न थी ,आप लोग को जाति -धर्म की पड़ी है जिंदगी की नहीं ,उसका नाम रमेश रावत तो क्या हुआ? इंसान और नेक इंसान। पहली बार गुलाबो की इतनी ऊंची आवाज सुनकर मैं अचंभित रह गयी । मम्मी का अपना ही राग शुरू अरे!बाप रे तूने ये सब किया। तेरे पापा और मैंने कभी किसी चीज की कमी महसूस नहीं होने दी तूने ये दिन दिखाया। गुलाबो का साथ मुझे बगल में खड़े रमेश का साथ महसूस हुआ। गलत क्या किया?जब से होश संभाला मम्मी ने पहली बार हाथ उठाया। लेकिन गुलाबो ने चट हाथ पकड़ लिया बीजी बस----। मैं रोते हुए अंदर चली गई गुलाबो अभी भी मम्मी-पापा का सामना कर रही आप लोग दीदी की शादी रमेश से ही करेंगे वरना मैं घर छोड़कर जा रही हूं। जा- जा चली जा और तेरी इतनी हिम्मत हाथ पकड़ा थोड़ा सा प्यार क्या दे दिया?तू तो सिर चढ़ अपनी औकात ही भूल गयी। गुलाबो अपना सामान बांधे जा रही,मैं उसकी तरफ देख भी नहीं पा रही थी। जिस गुलाबो ने मेरे लिए आज घर छोड़ा उसके लिए मैं कुछ नहीं कर पा रही हूं। मुझे खुद पर गुस्सा आ रहा था,गुलाबो पास आयी दीदी अपना ध्यान रखना हल्के से हाथों को दबाया और चली गई । शादी का दिन आ गया धूमधाम मची हुई है,मेरी नजरें सिर्फ़ गुलाबो को ढूंढ रही हैं काश एक झलक गुलाबो की मिल जाए काश-----!

रायबरेली

ISSN:2583-8849